जादुई वसंत

कोरिया की लोककथा

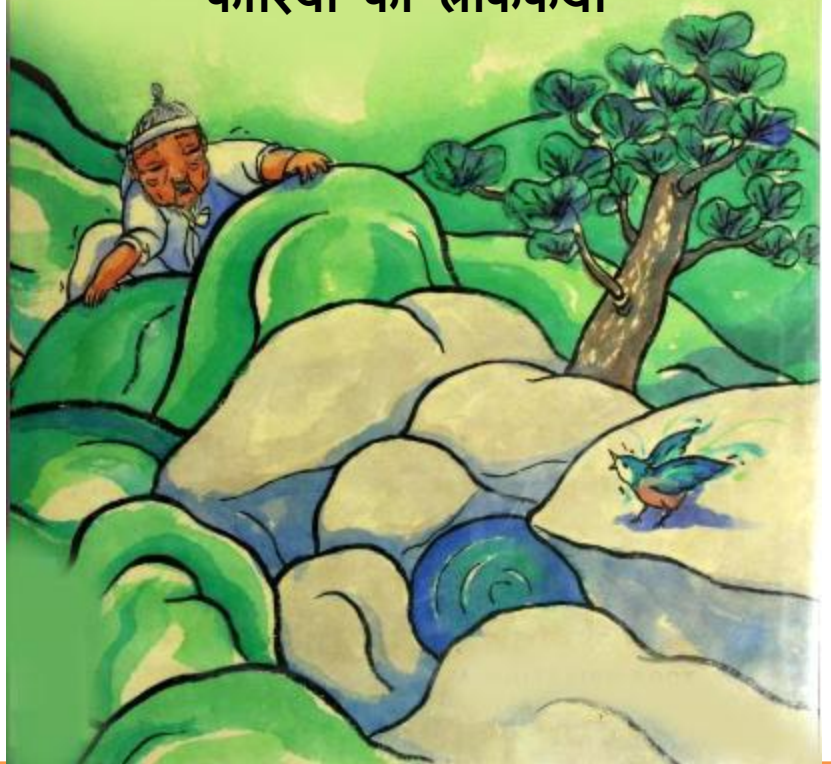

जादुई वसंत

कोरिया की लोककथा

बहुत पुरानी बात है. कोरिया के एक छोटे गाँव में एक बूढ़ा दंपत्ति रहता था. उनकी कोई संतान नहीं थी. वे बड़े मेहनती थे. वो दिल से एक छोटा बच्चा चाहते थे – जिससे कि वे उसकी परवरिश कर सकें. उनका धनी और लालची पड़ोसी हमेशा उस दंपत्ति के पुराने, पैबंद लगे कपड़ों की मज़ाक उड़ाता था. जब बूढ़ा आदमी लकड़ी काट रहा होता, तो पड़ोसी उसपर ताने कसता और कहता, "बूढ़े आदमी, मदद के लिए तुम्हारा बेटा कहाँ है?"

फिर एक दिन एक रहस्यमयी नीली चिड़िया बूढ़े आदमी को एक जादुई झरने के पास ले जाती है. झरने का पानी पीकर बूढ़ा फिर जवान बन जाता है. पर यह सिर्फ आधी कहानी ही है. झरने की अदभुत शक्ति उस बूढ़े दंपत्ति को उनके ज़लील पड़ोसियों से न्याय भी दिलाती है. अंत में बूढ़े दंपत्ति को एक बियाबान अजनबी जगह में एक बच्चा भी मिल जाता है!

जादुई वसंत

कोरिया की लोककथा

पुराने ज़माने की बात है कोरिया के एक गाँव में एक नेक बूढ़ा आदमी और उसकी पत्नी रहते थे. वो आदमी वाकई में बूढ़ा था. उसके पीठ झुककर दोहरी हो गई थी, और उसकी दाढ़ी एकदम सफ़ेद थी. क्योंकि उसकी कोई औलाद नहीं थी इसलिए वो बूढ़ा रोजाना जंगल में लकड़ी काटने जाता था. और बुढ़िया घर में अकेले दिन भर कपड़े सिलती थी क्योंकि उनके घर में कोई बच्चा नहीं था.

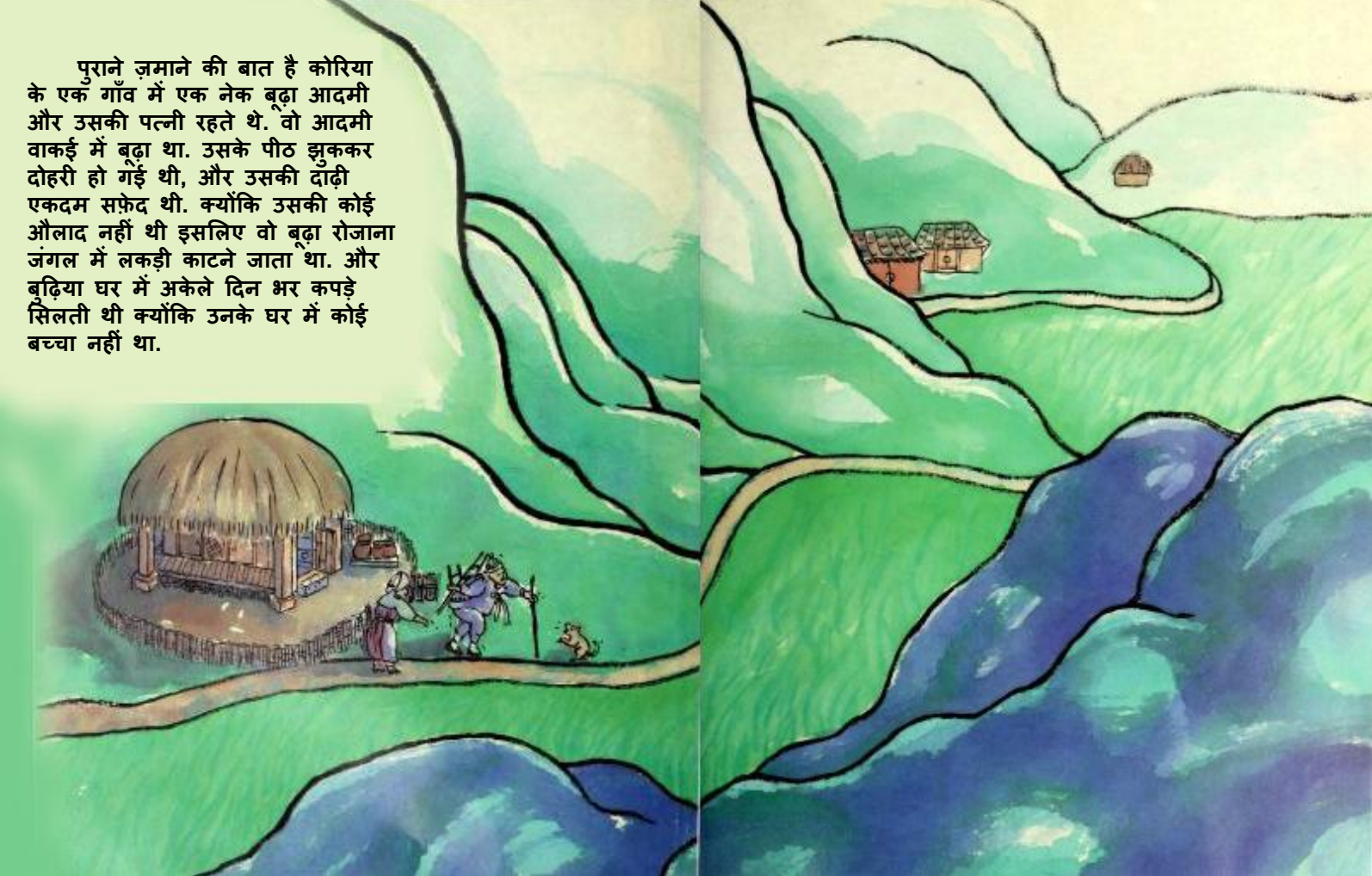

उनका पड़ोसी एक धनी आदमी था. वो बूढ़ा और लालची था. वो अपना सारा काम नौकरों से करवाता था. जब कभी भी वो उस बूढ़े आदमी को जंगल में कुल्हाड़ी लेकर जाते हुए देखता था तो वो हँसते हुए ताने कसता था. वो कहता, "अरे, बूढ़े आदमी, मदद के लिए तुम्हारा बेटा कहाँ है?" वो लालची आदमी बुढ़िया के सिले कपड़ों को देखकर हमेशा हँसता था.

पर वो बूढ़े दंपत्ति इस सब को सहन करते थे. उन्होंने एक-दूसरे से भी कभी उसकी कोई शिकायत नहीं की.

वसंत की एक सुबह रोजाना की तरह बूढ़ा जंगल में लकड़ी काटने गया. उस दिन धीमी-धीमी हवा बह रही थी और सूरज की रोशनी पेड़ों के पत्तों के साथ अठखेलियाँ कर रही थी. बूढ़े ने सोचा, "आज बड़ा सुहाना मौसम है. कुछ देर आराम के बाद काम शुरू करूंगा." फिर वो वहीं एक पेड़ के ठूंठ पर बैठ गया.

तभी एक नीली चिड़िया उड़ती हुई वहां आई और बूढ़े के पास एक पेड़ के शाख पर बैठ गई. चिड़िया का संगीत बहुत मधुर था – जैसे बारिश की बूंदे गिर रही हों. उस संगीत में बूढ़ा एकदम मगन हो गया और अपना सारा कामकाज भूल गया.

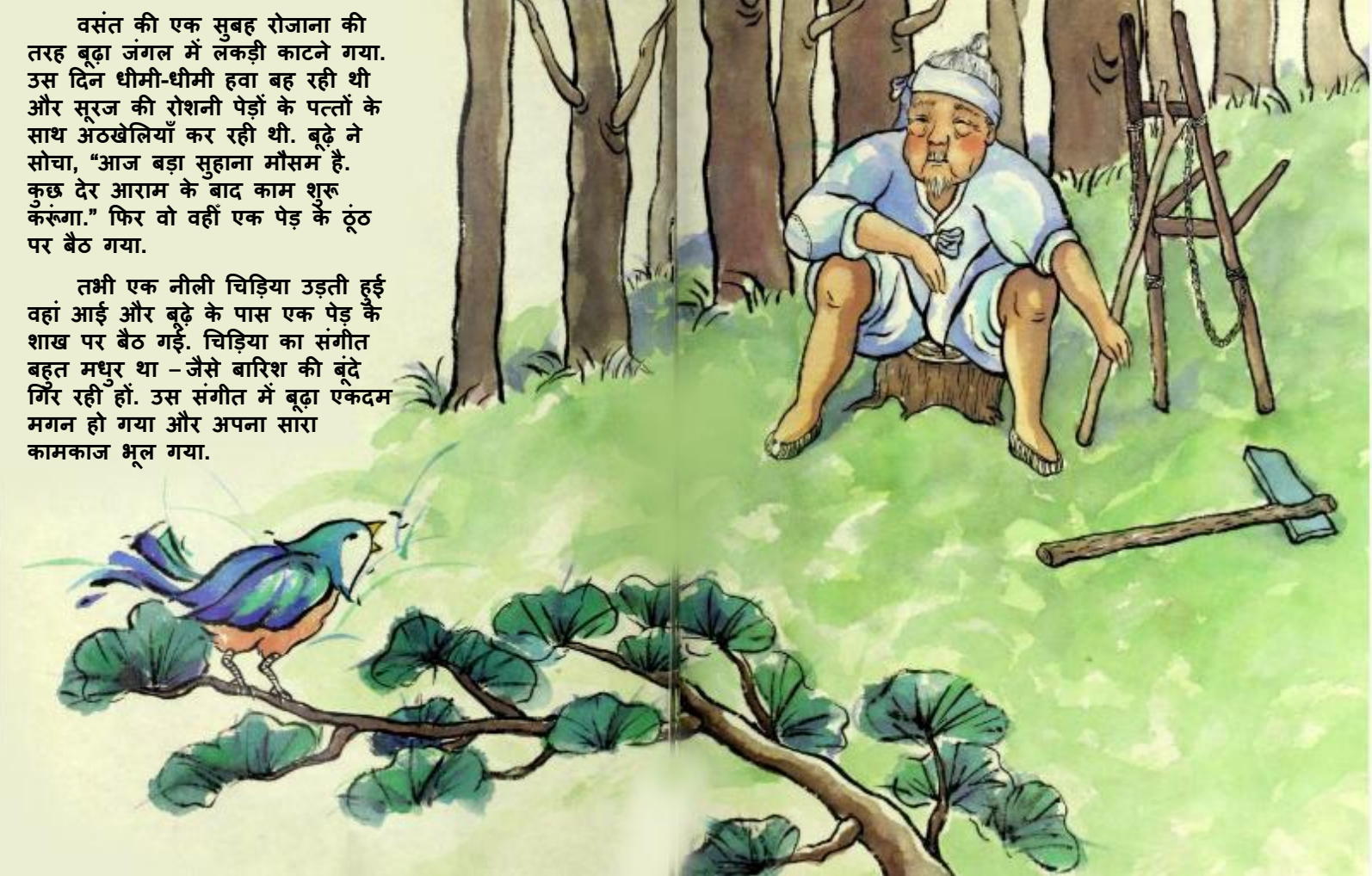

तभी अचानक चिड़िया उड़कर एक दूसरे पेड़ पर चली गई. बूढ़ा भी उसके पीछे-पीछे चला. पर उसी समय चिड़िया उड़कर कुछ आगे चली गई. चिड़िया लगातार गाती रही और बूढ़ा उसका पीछा करता रहा.

इस तरह पहाड़ी, वादी और झरने पार करता हुआ बूढ़ा चिड़िया के पीछे-पीछे चलता रहा. वो चलते-चलते नीली चिड़िया के मधुर संगीत को सुनता रहा.

अंत में चिड़िया बड़ी तेज़ी के उड़ती हुई के वादी में गई और वहां एक चपटे पत्थर पर जाकर बैठ गई. चिड़िया बैठने के बाद उस बूढ़े आदमी की ओर देखती रही और लगातार गाती रही. कुछ देर बाद बूढ़ा हांफता हुआ उस चिड़िया के करीब आ पहुंचा.

जैसे ही बूढ़े ने एक गहरी सांस ली वैसे ही उसे दो पत्थरों के बीच में एक पानी का झरना बहता हुआ नज़र आया. उसने इतना साफ़ और निर्मल पानी पहले कभी नहीं देखा था. बूढ़ा इतनी देर चलते-चलते बहुत थक गया था और उसे ज़ोरदार प्यास लगी थी.

फिर उसने अपने दोनों हाथों से एक चुल्लू पानी पिया. पानी पीने के बाद उसने अपने शरीर में एक अजीब सी सिहरन महसूस की. उसने पहले कभी भी वैसा महसूस नहीं किया था. उसे ऐसा लगा जैसे उस पानी से उसके शरीर का रोम-रोम साफ़ और निर्मल हो गया हो.

उसके बाद वो घास पर लेट गया. अब उसकी धनुष जैसी मुड़ी पीठ भी नहीं दुःख रही थी. फिर वो एक गहरी नींद में सो गया.

जब उसकी आँख खुली तब दो पहाड़ों के बीच सूरज ढल रहा था. बूढ़े आदमी ने अपने हाथ की मुट्ठी खोली और फिर बंद की. फिर वो एक झटके से अपने पैरों पर खड़ा हो गया. उसकी मांसपेशियों में एक नई ताकत आ गई थी. उसने इतनी शांति पहले कभी महसूस नहीं की थी. साथ-साथ उसका शरीर भी उर्जा से भरा था.

फिर एक युवा हिरन की तरह वो दौड़ता हुआ जंगल में गया. वहां उसने झट से पूरे दिन का काम ख़त्म किया!

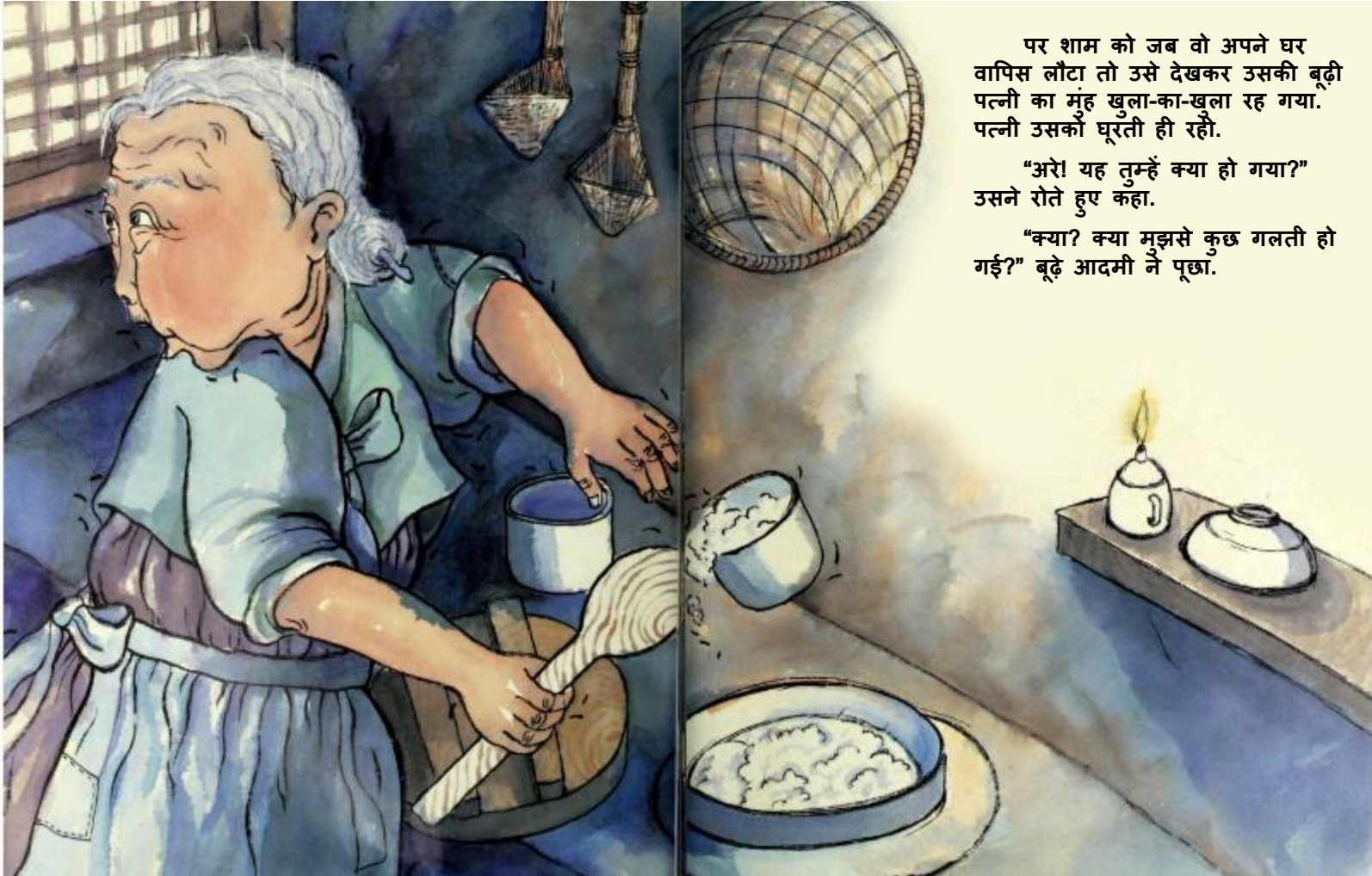

पर शाम को जब वो अपने घर वापिस लौटा तो उसे देखकर उसकी बूढ़ी पत्नी का मुंह खुला-का-खुला रह गया. पत्नी उसको घूरती ही रही.

"अरे! यह तुम्हें क्या हो गया?" उसने रोते हुए कहा.

"क्या? क्या मुझसे कुछ गलती हो गई?" बूढ़े आदमी ने पूछा.

फिर बूढ़ी औरत ने अपने पति की उँगलियों से उसके चेहरे को सहलाया. तब बूढ़े आदमी को एक झटका लगा. क्या हुआ? तब जाकर उसे सबकुछ समझ में आया. वो दुबारा युवा बन गया था! उसकी जवानी वापिस लौट आई थी. फिर उसने ख़ुशी से कांपते हुए अपनी पत्नी को नीली चिड़िया के संगीत और उस जादुई झरने के बारे में बताया. उसके बाद दंपत्ति मिलकर ख़ुशी के आंसू रोने लगे.

अगले दिन सुबह वो आदमी अपनी पत्नी को भी जंगल के आगे वाली वादी में ले गया. वहां उसने पत्नी को वो झरना दिखाया. झरने का एक घूँट पानी पीने के बाद पत्नी भी एक युवती बन गई और उसमें भी शक्ति आ गई. फिर वो युवा दंपत्ति साथ-साथ घर लौटा. फिर उन्होंने अपने भविष्य के बारे में कई नए सपने संजोए.

उनके लालची पड़ोसी ने उनके बदले हुए रूप को बहुत ध्यान से देखा. एक दिन जब वो दंपत्ति अपने बाग़ में काम कर रहे थे तो पड़ोसी उनके पास आया.

“मेरे मित्रों, लगता है कि अब तुम्हारी तकदीर चमकी है,” उसने झूठी मुस्कान के साथ कहा.

“हाँ! हाँ!...” बूढ़े आदमी ने उसकी बात को काटते हुए कहा. “काश हमारा कोई बच्चा होता जिसके साथ हम इन खुशियों को बाँट सकते...”

फिर उस युवा आदमी ने अपने पड़ोसी को जादुई झरने का राज़ बताया और वहा जाने का रास्ता भी बताया. “आपको उस झरने के पानी की सिर्फ एक घूँट की ज़रुरत होगी,” उसने पड़ोसी से कहा.

यह सुनते ही लालची पड़ोसी झरने की तरफ दौड़ा. उसने फटाफट वादी पार की और वो दो पत्थरों के बीच से निकलते झरने के पास पहुंचा. फिर वो घुटनों के बल बैठा और उसने दोनों हाथों से झरने का पानी पीना शुरू किया.

उसने भरपेट पानी पिया. उसने इतना पानी पिया कि अब उसके लिए चलना मुश्किल हो गया. उसे पास में ही छाँव दिखी और वो वहीं लेटकर सो गया.

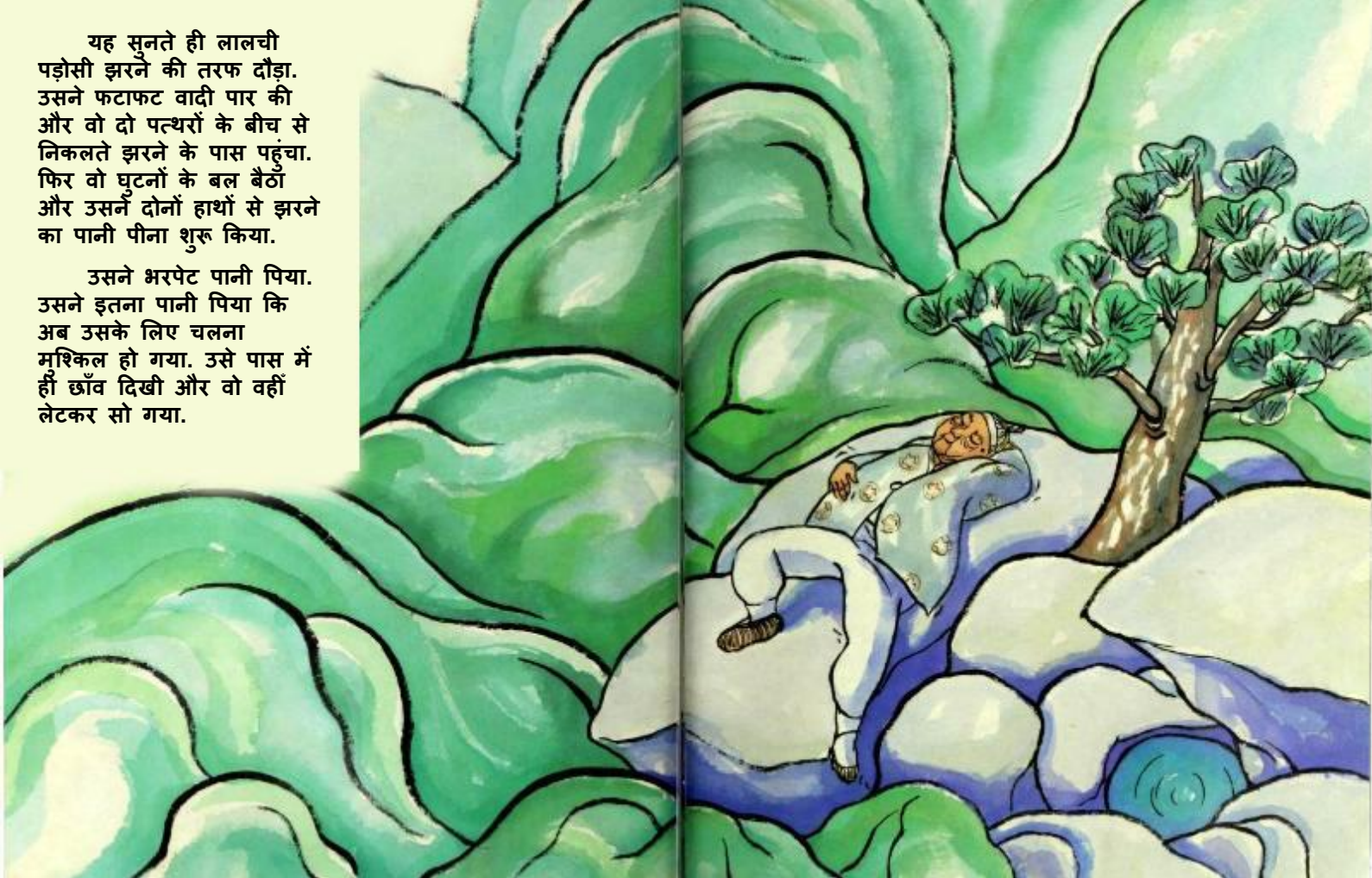

शाम के बाद जब रात होने लगी और उनका पड़ोसी अपने घर वापिस नहीं लौटा तो युवा दम्पति को फिकर होने लगी. तब वे लालटेन लेकर उसे खोजने निकले. जब वो वादी के पास पहुंचे तो उन्हें किसी के रोने की आवाज़ सुनाई दी.

युवा दंपत्ति ने फिर अपनी चाल तेज़ की. उनके पड़ोसी के कोट में एक छोटा बच्चा लिपटा हुआ पड़ा था. बच्चा रो रहा था और अपने पैर पटक रहा था. पत्नी ने बच्चे को उठाया और उसे अपनी छाती से लगाया. उसके बाद बच्चे ने तुरंत रोना बंद कर दिया.

फिर पति-पत्नी उस बच्चे को लेकर अपने घर वापिस आए. उन्होंने बड़े लाड़-प्यार से उसे पाला-पोसा.

उसके बाद उस दंपत्ति बड़ी ख़ुशी से एक लम्बी ज़िन्दगी जी.